227
H (S) (P)
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1340/10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 227

17/1

891.431
Sh 23Ah

Benares
No 1608. 29.30

वंदे मातरम्

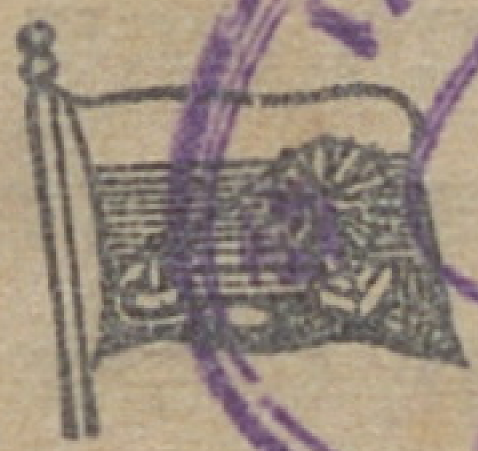

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

अहिंसा का झंडा

विपदाओं के मेघ देखकर तुम घबराना ज़रा नहीं।
तनिक न डिगना, जो डिग जावें चन्द्र सूर्य औ धरा कहीं॥

चुने हुए आदर्श तथा अहिंसात्मक राष्ट्रीय भजन

तथा

महात्माजी की ११ शर्तें

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक

पं० विश्वनाथ शर्मा,

वैदिक औषधालय,

राजादरवाजा, काशी।

प्रथम बार ६०००] [मूल्य -)

३) सैकड़े

PL 350

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 227
Date 4.12.71
GOVT. OF INDIA

महात्मा गांधी की ११ शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब! सर अपना अब तो झुकाना होगा॥

१ नशीली चीज़ें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥

२ हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥

३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे जरा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा॥

४ फिजूल-खर्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा॥

५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा॥

६ स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा॥

७ समुद्र तट का जहाज़ी बाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के, अधीन रखकर चलाना होगा॥

८ जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ो।
बक़ाया क़ैदी पोलिटिकल सब, तुरन्त साहब! छुड़ाना होगा॥

९ उठा लिये जायँ राजनैतिक, जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिसदफा अलिफ है, उसेतोबिलकुलमिटानाहोगा॥

१० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा॥

११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठा दो या करदो उसको प्रजा के ताबे।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा॥

अहिंसा का झंडा

(१)

क़ौम के ख़ादिम की है जागीर वंदेमातरम् ।
विश्व-विजयी शत्रु-विजयी मंत्र वंदेमातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर बंदूक अपनी पर ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का तीर वंदेमातरम् ॥
क़त्ल कर हमको न क़ातिल तू, हमारे खून से ।
तेग़ पर हो जायगा तहरीर वंदेमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बाँधी कमर ।
रोक देगा दूर से शमशीर वंदेमातरम् ॥
जुल्म से गर कर दिया ख़ामोश मुझको देखना ।
बोल उट्ठेगी मेरी तस्वीर वंदेमातरम् ॥
सर जमीं इङ्गलैंड की हिल जायगी दो रोज़ में ।
गर दिखायेगी कभी तासीर वंदेमातरम् ॥
संतरी मुज़तरिब 'शर्म्मा' की भी हर झंकार में ।
बोलती थी जेल में जंजीर वंदेमातरम् ॥

(२)

है आज ज़माना ऐ वीरो, आज़ादी के दीवानों का ।
जीवन धन क़ुर्बान करो है आज समय बलिदानों का ॥

अपना स्वराज लेना होगा अँगरेज आप भग जावेंगे।
अपने पैरों पर आप डटो औ आस तजो परवानों का॥
हो तौक़ ग़ुलामी टूक टूक माता का बंधन कट जावे।
बलि वेदी पर बलि होने को अब चले झुंड मरदानों का॥
हिमालया से सागर तक अरु ब्रह्मपुत्र से गुर्जर लों।
अब अटक कटक तक आदर हो इन गांधी के फरमानों का॥
फाँसी से तुम डरो नहीं परवाह नहीं गोली बरसे॥
हो खुली सङ्गीनों पर छाती यह कौल रहे मरदानों का।
चलु हिन्द देश में एक सिरे से आग लगा दें हे भाई॥
हो उथल-पुथल इस देश बीच औ खौले खून जवानों का।

(३)

अब तो चर्खे पर बन्दर नचाये जायेंगे।
तकली प्यूनी से लंडन फँसाये जायेंगे॥
लंडन की बनी मखमली सारी व लंकलाट।
साटन गिरंट डोरियों का कर दो बायकाट॥
कपड़े सारे विदेशी जलाये जायेंगे॥
बंडी के लिये छींट न हर्गिज रँगाओ तुम।
उसकी जगह पै शुद्ध खद्दर मगाओ तुम॥
अब तो भारत के पैसे बचाये जायेंगे।
तोप से न तीर से न तोमर न तेग़ हू से,
तोड़े से तमंचे से न तीक्ष्ण तबर से।

सेल से न साँग से न सैफ से न सिप्प हू से,
सँहथी सिरोही से न शमशेर वर से ॥
शान भरे सिंह शार्दूल से न सहमे जे,
वेई थरहरैं एक 'हाड़ के पंजर' से।
'दीन' कवि चर्ख़ा को बम से न कम जानो,
ज़ब्त हो गये हवास खद्दर के डर से ॥
अब तो तकुवे पर बंदर नचाये जायेंगे ॥

(४)

निकालो थोड़ा सा वक्त अपना, चलाओ चर्ख़ा चलाओ चर्ख़ा।
जो और थोड़ा सा वक्त पाओ, तो बीनो कपड़ा चलाओ चर्ख़ा ॥
जो चाहते हो निजात अपनी, तो पहनो अपने गले में कफ़नी।
उठो करो देश की भलाई, जो सीखे उसको सिखाओ चर्ख़ा ॥
डरें न योरप के गन से दम भर, पुकार दो आज जाके घर-घर।
मशीनगन जो तुम्हें दिखाये, उसे तुम अपना दिखाओ चर्ख़ा ॥
यह विष्णु का चक्र है सुदर्शन, कभी न इसको ज़लील समझो।
जो चर्खे़ इक़बाल पर हो जाना, तो पहले घर में चलाओ चर्ख़ा ॥
पड़ा है योरप में ज़लज़ला सा, कि हाय सारा तिलिस्म टूटा।
यह किसने कानों में आके फूँका जुबाँ को रोको चलाओ चर्ख़ा ॥
अगर गुलामी से छूटना हो, स्वराज की दिल में हो तमन्ना।
तो खाके मोटा पहन के खद्दर, घरों में बैठे चलाओ चर्ख़ा ॥

सुना है दाना भी घर में बैठे, चलाया करते हैं अपना चर्ख़ा ।
तो तुमको अब उज्र क्या है बाक़ी, बस आओ २ चलाओ चर्ख़ा ॥

(५)

चला दो चर्ख़ा हर एक घर में, ये चर्ख़ तब तुम हिला सकोगे ।
बँधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे ॥
हमारे चर्ख़े में ऐसा फ़न है, जो आजकल की मशीनगन है ।
फिर मैनचेस्टर वो लंकाशायर, का जीत इससे क़िला सकोगे ॥
रुई न भारत की हो रवाना, बने स्वदेशी का ताना बाना ।
इसी तगे से विदेशी वाणिज, को आप फाँसी दिला सकोगे ॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा ।
बचे जो सत्तर करोड़ रुपया, तब अपने बच्चे जिला सकोगे ॥

(६)

इलाही तुम भी ख़्याल रखना गवाह तुमको बना रहे हैं ।
हम हिन्दवालों को पाके दुर्बल वो हर तरह से सता रहे हैं ॥
सुना है फ़रियाद पर वो मेरे ग़ज़ब के तीवर चढ़ा रहे हैं ।
तो सर कटाने की आर्ज़ू में हम आज मक़तल में जा रहे हैं ॥
अजब है उत्साह सबके दिल में कि लोग जेलों में जा रहे हैं ।
जो कल थे मख़मल पै सोनेवाले वो आज कंबल बिछा रहे हैं ॥
हम हिंद माता का ऋण चुकाने को खून अपना बहा रहे हैं ।
मगर उन्हें क्या जवाब होगा जो हम पै गोली चला रहे हैं ॥
हम हिन्द माँ के हैं ऐसे बच्चे जो जान अपनी लड़ा रहे हैं ।

और एक भारत सपूत वो हैं जो पेश डंडों से आ रहे हैं ॥
जो मेरे महफ़िल के बामुक़ाबिल वो गन मशीनें लगा रहे हैं ।
तो हम भी आहों की ताक़तों से उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं ॥
फ़लक के नीचे से हट वो जायें अभी से उनको चेता रहे हैं ।
हम अपनी आहों से इस समय आस्माँ को भी डगमगा रहे हैं ॥
जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में आहो गिरियाँ मचा रहे हैं ।
ये रोजे महशर को सोते फ़ितनों को आज ही से जगा रहे हैं ॥
शमा की सूरत में दिल जलाकर वो लेके गुलगीर आ रहे हैं ।
जो हिंद के हैं चिरागे रोशन बिचारे सर को कटा रहे हैं ॥
वो जोश खाकर दमन को अपने जो चक्र अज़हद चला रहे हैं ।
तो अहले 'शायक़' स्वतंत्रता के खुद अपने सर को झुका रहे हैं ॥

(७)

जो वक्त शिकवा खुदा से महशर
में रोके हम अश्कबार होंगे ।
तो सुन के भारत की दुर्दशाओं
को रंज परवरदिगार होंगे ॥
करोगे फरियाद कैसे रोकर
खुदा के हमसर बरोजे महशर ।
ये चन्द क़तरे भी आँसुओं के
न मिलने वाले उधार होंगे ॥

महात्मा जी को कैद रखने से
आन्दोलन न दब सकेगा।
अभी तो तैंतिस करोड़ गान्धी
हम हिन्द में आशकार होंगे॥
हज़ारों मोती के होंगे जौहर
औ लाखों होंगे जमा जवाहर।
औ मरने वाले वतन पै अपने
करोड़ों क्या बेशुमार होंगे॥
तुम्हारे तीरे सितम को मेहमाँ
बना के दिल में जो रख रहे हैं।
ये मेरी आहों में होके शामिल
तुम्हारे सीने में पार होंगे॥
ग़ज़ब में आकर न बदलो तेवर
चला के ख़ंजर भी आज़मा लो।
क़सम खुदा की ये सच ही मानो
ज़रा न हम बेक़रार होंगे॥
जो कत्ल करने की है तमन्ना
तो ये भी दिल में ख्याल रखना।
हमारे ख़ूँ के हरएक क़तरे
स्वराजे उम्मीदवार होंगे॥
हमारे भारत के बच्चे बच्चे
बढ़ा के उत्साह कह रहे हैं।

कि हिन्द माता के क़दमों में सर
चढ़ा के हम जाँनिसार होंगे॥
जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में
भी गोलियों को चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीने में चुभने वाले
हज़ारों बिच्छू के आर होंगे॥
बने हैं जाँबाज़ हम भी 'शायक'
ब वक्ते जिबहः भी देख लेना।
कि जेरे ख़ंजर की जानशीनों
के सर ये बीसों हज़ार होंगे॥

(८)

अपनी वफाओं का यह नतीजा मिला हमें,
गैरों का ज़ुल्म जोर उठाना पड़ा हमें।
कब तक सतायेंगे यह सितमगर यहाँ हमें,
अब तो करार लेने दे जेरे समाँ हमें॥
जलियानवाला बाग़ बना है तमाम हिन्द,
आती है गोलियों की बराबर सदा हमें।
ख्वाहिश है मुल्क कौम के आज़ादी की अगर,
लाज़िम है अपने मुल्क पै होना फ़िदा हमें॥
तोप वो मशीनगन हैं उधर हमको खौफ क्या,
हुब्बे वतन का चाहिये काफी असा हमें।

अफ़सोस जेलख़ाने में हों लीडराने मुल्क,
और कुछ न आती हैफ है शर्मोहया हमें ।
स्वराज्य की अगर है तमन्ना बढ़े चलो,
हर हर क़दम पै देती है हिम्मत सदा हमें ।
हम जान देने के लिये तैयार बैठे हैं,
अब इसके आगे कौनसी देंगे सज़ा हमें ॥
क्या अहले हिन्द के लिये इन्साफ है यही,
हक़ माँगने पै मिलती है इलाही सज़ा हमें ।
आज़ादी अपनी चाहो करो मिलके इत्तिफाक़,
देती सबक़ है हिन्द की यारो क़ज़ा हमें ॥
परमात्मा से अर्ज़ है 'शर्मा' की रात-दिन,
आज़ादिये वतन की अता हो बसा हमें ।

(६)

अहाहा मोहन के मुख से निकला
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
सुना सभी ने सचेत होकर
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
समय था उनतीस सन् का आख़िर
प्रमत्त थे राज - मद में शासक ।
पुकारा मोहन ने रावी तट पर
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।

समीर में नीर में गगन में
वचन में तन में हरएक मन में।
समा गया वह महा मधुर स्वर
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
बना के कुटिया स्वतंत्रता की
सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
स्वतंत्रता के लिये सभी के
हृदय में जलती है आग भारी।
हैं देखते स्वप्न में भी पड़कर
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक तक
बजेगा डंका स्वतंत्रता का।
कहेंगे तैंतिस करोड़ मिलकर
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥

(१०)

शहीदों के खूँ का असर देख लेना।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं।
बहा देंगे खूँ की नहर देख लेना॥

झुका देंगे गर्दन को हम जेरे खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज गोली चलायेंगे हम पर।
तो क़दमों में उनका ही सर देख लेना॥
जो नख्ल हमने खींचा है खूनेजिगर से।
वो होगा कभी बारबर देख लेना॥
किनारे पै आये भँवर से यह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर नगीं हो।
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आजाद अपना।
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना॥

(११)

होनेवाला काम जो है वह भी हो ही जायगा।
जुल्म करते करते जालिम खुद बखुद मिट जायगा॥
कौन कहता है कि उनसे मामला हो जायगा।
हाँ ये माना रोज़े महशर फैसला हो जायगा॥
था किया ऐसा जुल्म अन्याय रावण दुष्ट ने।
राम ने जैसा किया था वैसा ही अब हो जायगा॥
कंस से बदला लिया था कृष्ण ने अन्याय का।
इंडियन यूरोपियन में वैसा ही हो जायगा॥

कृष्णजी के कर की मुरली रामचन्दर का धनुष ।
गाँधजी के कर में चरखा चक्र-सा हो जायगा ॥
सत्य से होती विजय थी सब तरह के युद्ध में ।
सत्य पर आरूढ़ हो स्वराज्य हो ही जायगा ॥

(१२)

ऐ यारो खेल समझते हैं हम जेल में आने जाने को ।
जानें हैं हमारी नज़रे वतन निकली है नज़र चढ़ाने को ॥
हम अपने वतन के सेवक हैं हम अपनी कौम के ख़ादिम हैं ।
बच्चों का खेल समझते हैं हम मरने को मिट जाने को ॥
बेजुर्म ख़ता अँगरेजों ने शेरों को हमारे पकड़ा है ।
सौदा ये हमें भी भाया है जायेंगे जेल बसाने को ॥
ये कैसी हुकूमत है यारो अल्लाह का कहरो ग़ज़ब इसपर ।
हम लाखों मन ग़ल्ले के मालिक मुहताज हैं दाने दाने को ॥

(१३)

दिनों दिन कदम अब बढ़ायेगा भारत ।
पराक्रम व जौहर दिखायेगा भारत ॥
हटायेगा अपना क़दम अब न पीछे ।
पहुँच लक्ष्य पर अपने जायेगा भारत ॥
सहेगा न अपमान ज्यादा दिनों तक ।
गुलामी का बंधन छुड़ायेगा भारत ॥
बहुत लुट चुका है बहुत खो चुका है ।
अधिक अब न निज को लुटायेगा भारत ॥

बहुत ज्यादा अब हो चुका रक्त शोषन ।
रुधिर अब न अपना पिलायेगा भारत ॥
भुवन में अहो गर्व गौरव से अपना ।
तिरंगा पताका उड़ायेगा भारत ॥
सुसन्देश गांधी का शान्ति क्रान्तिकारी ।
विदेशों को सादर सुनायेगा भारत ॥
पसारेगा नव सभ्यता शांति देगा ।
जगद्गुरु पुनः यह कहायेगा भारत ॥
बढ़ो देश का काम कर लो हे वीरो ।
तुम्हें भी अमर यह बनायेगा भारत ॥

(१५)

आज़ादी की झंकार मोहनी गूँज रही है तारों में ।
है कैसा जादू भरा हुआ खादी के मोटे तारों में ।
सब से पहले झंकारों ने मन मोह लिया था मोहन का ।
चितरंजन का चित बना दास तब निकला यह अखबारों में ॥
हो गया नेह नेहरू का जो पेरिस से वस्त्र धुलाते थे ।
बँध गये सदा के लिये देश के भक्त सभी इन तारों में ॥
मिट गये विकार उन अंगों के जब खादी के अंगे पहिन लिये ।
सर फूटा गोली लगी हुये विचलित नहीं अत्याचारों में ॥
तप अत्याचार अनल में उनकी दमक नहीं घटने पाई ।
क्या पारस बिकने लगा आज खादी बनकर बाज़ारों में ॥

[१५)

खादी के नीरस तारों में है देश-प्रेम-जल उमड़ रहा।
मुर्दा भारत जी उठा न जल है सुधा भरा इन तारों में॥
है तार नहीं किरण है उज्ज्वल स्वतंत्रता के रवि का।
है देश-भक्त-हिय-कमल खिलाने की ताक़त इन तारों में॥
क़ानून-कुमुद मुद गये पुलिस ने खुद इनको ठुकराया है।
निकलें ज़नानख़ानों से हिम्मत कब उलूक मक्कारों में॥
है ब्रम्ह शस्त्र या पशुपति अथवा बज्र दनुज कुल संहारी।
आ गया असर अर्जुन धनुवाँ की डोरी का इन तारों में॥
है दहल उठा इंगलैंड देश चौपट व्यापार हुआ उनका।
दर्शन होंगे, शक नहीं "मस्त" आज़ादी के इन तारों में॥

(१५)

हो बन्दी वे पग जाय गहो जिन पै अब आश हमारी है।
अति चातुर चरख़ा चक्र गहे कतली कर खद्दरधारी है॥
चलिये-चलिये उस तीरथ में जन्मा जहँ कृष्ण मुरारी है।
व्रत एक अहिंसा है जिसका सर्वोपरि शांत पुजारी है॥
साधन निस्वार्थ सदा जिसका गुर एक त्रिया व्रतधारी है।
मद है नहिं नीति विशारद है इस भारत का हितकारी है॥

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय, सरस्वती प्रेस, काशी

बिल्कुल नई चीज़
अद्भुत आविष्कार

श्यामधारा

फायदा न हो तो
दाम वापस ।

बेकार तथा नकली साबित करनेवाले को ५००) इनाम

इस दवा की एक शीशी हमेशा पास रखने से आप हर शिकायत से बच सकते हैं। रेल जहाज़ की सफर में, घर में, देहातों में योग्य चिकित्सक का काम देती है। विविध अनुपानों द्वारा २२ मर्ज में काम आती है—जैसे, सिर-दर्द, दाँत-दर्द, बदन का दर्द, आँख का उठना, धुँधलापन, जाला, नाखूनी, रतौंधो, हैज़ा, वमन, दस्त, बिच्छू के डंक पर, खुजली में फायदा पहुँचाती है। विशेष प्रशंसा बेकार है । जैसे, दोहा—"ग्रह भेषज जल पवन पट, पाय सुयोग कुयोग। होहि कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग।" अतः एक बार परीक्षा प्रार्थनीय है। थोक खरीदार दूकानदारों से विशेष रियायत—मूल्य बड़ी शीशी ।।।) छोटी ।।) नमूना =) ।

मिलने का पताः—

पं० विश्वनाथ शर्मा

वैदिक औषधालय,

राजा-दरवाजा, बनारस सिटी ।

नोट—एक रुपये से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती ।